एक दो दस

(बच्चों के खेल-गीत)

संकलनः मनोज साहू 'निडर'
चित्रांकनः बोस्की जैन

एकलव्य का प्रकाशन

एक दो दस

EK DO DUS

संकलनः मनोज साहू 'निडर'

चित्रांकनः बोस्की जैन

© एकलव्य / अक्तूबर 2011 / 5000 प्रतियाँ

इस किताब के खेल-गीतों का गैर-व्यावसायिक शैक्षणिक उद्देश्य से इसी या इसके समान कॉपीलेफ्ट चिह्न के तहत उपयोग किया जा सकता है। स्रोत के रूप में किताब का उल्लेख अवश्य करें तथा एकलव्य को सूचित करें। किसी भी अन्य प्रकार के उपयोग के लिए एकलव्य तथा संकलनकर्ता से सम्पर्क करें।

पराग इनिशिएटिव, सर रतन टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से विकसित

कागज़ः 80 gsm मेपलिथो और 210 gsm पेपरबोर्ड (कवर)

ISBN: 978-81-906971-3-2

मूल्यः ₹ 20.00

प्रकाशकः **एकलव्य**

ई-10, शंकर नगर बी.डी.ए. कॉलोनी,

शिवाजी नगर, भोपाल - 462 016 (म.प्र.)

फोनः (0755) 255 0976, 267 1017

www.eklavya.in

सम्पादकीयः books@eklavya.in

किताबें मँगवाने के लिएः pitara@eklavya.in

मुद्रकः आदर्श प्राइवेट लिमिटेड, भोपाल, फोनः 0755 - 255 5442

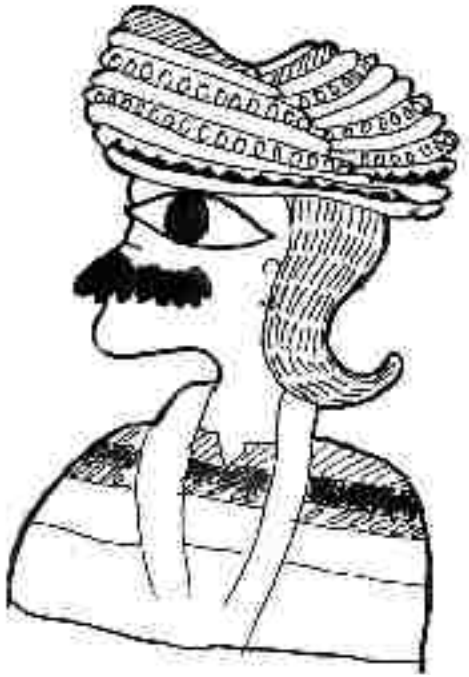

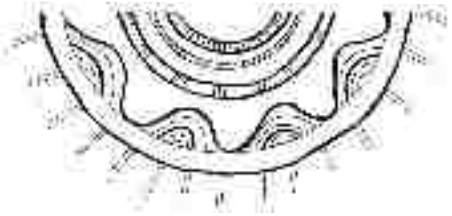

प्रस्तावना

एकलव्य से प्रकाशित बच्चों के खेल-गीतों का यह तीसरा संकलन है। इससे पहले प्रकाशित दोनों संकलन *बैठ घोड़ा पानी पी* और *अक्कड़-बक्कड़* खूब सराहे गए। पता नहीं इन गीतों का कोई रचनाकार है भी या फिर यूँ ही कभी खेल-खेल में किसी के मुँह से टूटी-फूटी लय में कुछ शब्द निकले और एक लम्बा सफर तय करते-करते एक गीत के रूप में ढल गए। स्रोत कुछ भी रहा हो, इन गीतों में काफी रस है, रोचकता है। हमारे देश के ग्रामीण एवं कस्बाई अंचल में शायद ही ऐसा कोई क्षेत्र होगा जहाँ किसी न किसी रूप में खेल-गीत प्रचलित न हों। बारीकी से देखें तो पता चलता है कि अलग-अलग स्थानों पर एक ही गीत उन स्थानीय परिवेशों में ढलकर मौजूद रहता है।

भाषा शिक्षण में खेल-गीतों की उपयोगिता पर प्रो. कृष्ण कुमार की पुस्तक *बच्चे की भाषा और अध्यापक* में विस्तृत चर्चा की गई है। *दूध जलेबी जग्गगा* की प्रस्तावना में तेजी ग्रोवर ने लिखा है, "अगर खेल-गीतों से बच्चे पढ़ने की शुरुआत करें, तो इस बात की बहुत सम्भावना है कि उन्हें पढ़ना और लिखना अपने आप ही अच्छा लगने लगे।" ये गीत वह सशक्त माध्यम है जिससे शिक्षा के क्षेत्र-खासकर भाषा शिक्षण- में बेहतर परिणाम लाए जा सकते हैं। इन गीतों से कई प्रकार की सहायक शिक्षण सामग्री तथा अन्य गतिविधियाँ तैयार की जा सकती हैं।

ये गीत अलग-अलग क्षेत्रों से चुने गए हैं। लगभग सभी गीत बच्चों द्वारा ही सुनाए गए। टेसू सम्बन्धी गीतों का प्रचलन मालवांचल में अधिक है। लेकिन इनका प्रभाव बुन्देलखण्ड में भी दिखाई देता है। इसी प्रकार, 'मोटा सेठ' गीत रायसेन ज़िले के सुलतानपुर ग्राम के बच्चों ने सुनाया था। 'न्यौता' गीत शाहगंज, ज़िला सीहोर की एक बालिका ने सुनाया था। जब उससे पूछा गया कि यह गीत उसने कहाँ से सीखा है तो उसका जवाब था, "जब भैया रोता था तो दादी यह गीत सुनाकर उसे चुप कराती थीं।" 'बिल्ली मौसी' गीत के साथ एक रोचक प्रसंग जुड़ा हुआ है। कुछ साल पहले जब एकलव्य होशंगाबाद परिसर में *अक्कड़-बक्कड़* का विमोचन किया जा रहा था तो एक स्थानीय बुज़ुर्ग ने *अक्कड़-बक्कड़* के गीत सुनकर अपने बचपन को याद करते हुए 'बिल्ली मौसी' गीत सुनाया! हमने इसे भी शामिल किया है। सभी गीत अपने आप में अनूठे और बहुत-सी स्मृतियाँ समेटे हुए हैं। उम्मीद है संकलन आपको पसन्द आएगा।

मनोज साहू 'निडर'

मोटा सेठ

मोटा सेठ
सड़क पर लेट
आई गाड़ी
फूट गया पेट
गाड़ी का नम्बर एट्टी एट
चल पड़ी गाड़ी इंडिया गेट

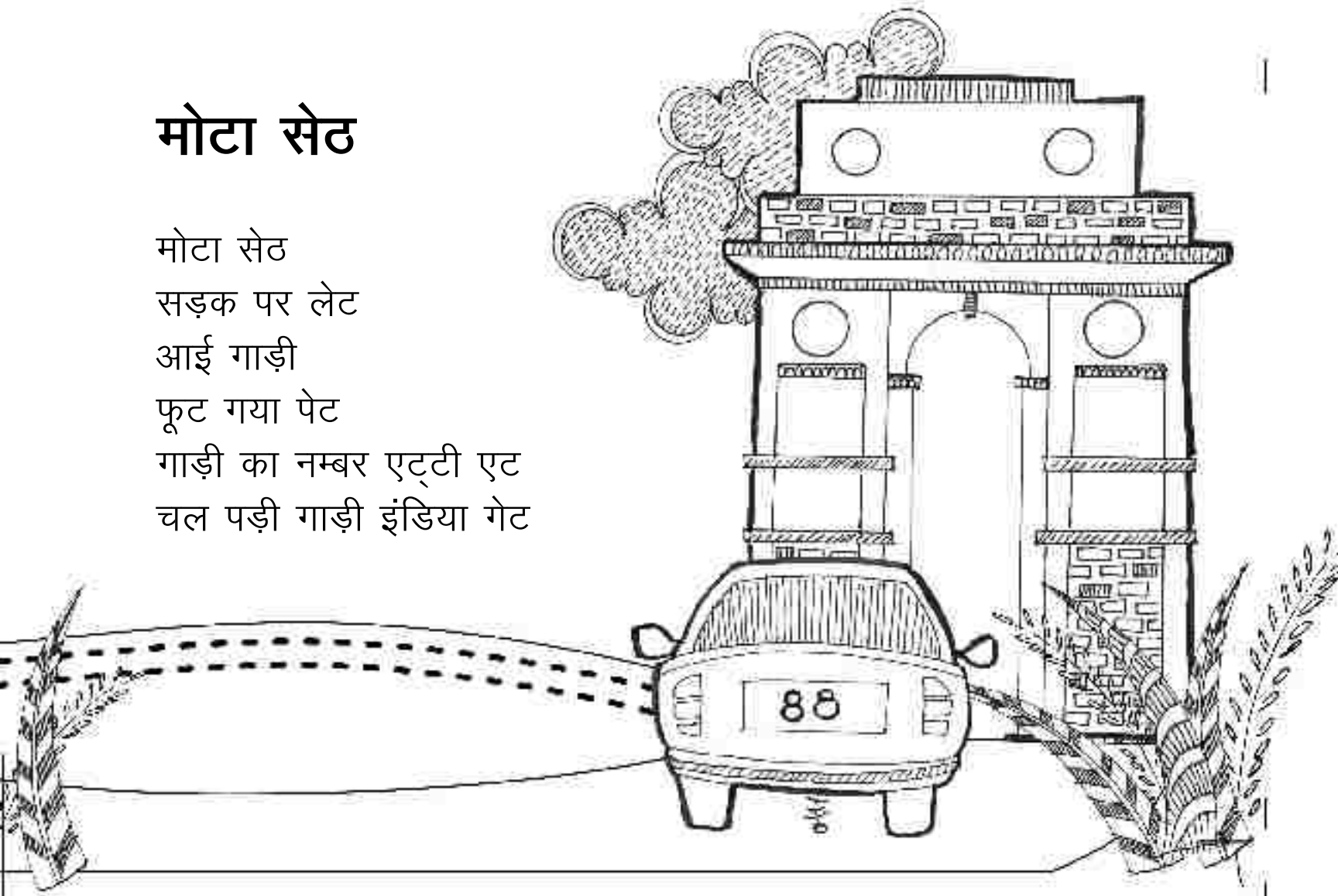

चन्दा मामा

चन्दा मामा आएँगे
दूध बतासे लाएँगे
चिड़िया चावल लाएगी
दादी खीर पकाएगी
हम सब मिलकर खाएँगे
जब चन्दा मामा आएँगे

मोटी अम्मा

मोटी अम्मा पिलपिली
बच्चा लेकर गिर पड़ी
बच्चे ने मारी लात
चल पड़ी बारात
बारात के नीचे अण्डा
खेलें गिल्ली-डण्डा

बिल्ली मौसी

बिल्ली मौसी प्यारी मौसी
कौआ मेरा मामा
मौसी पहने फ्रॉक घाघरा
मामाजी पैजामा

काँव-काँव कौआ जी बोले
म्याऊँ-म्याऊँ बिल्ली
कौआ जी कलकत्ता जाएँ
बिल्ली जाए दिल्ली

बिल्ली खाए दूध मलाई
कौआ खाए हलुआ
बिल्ली मौसी गोरी-गोरी
कौआ मामा कलुआ

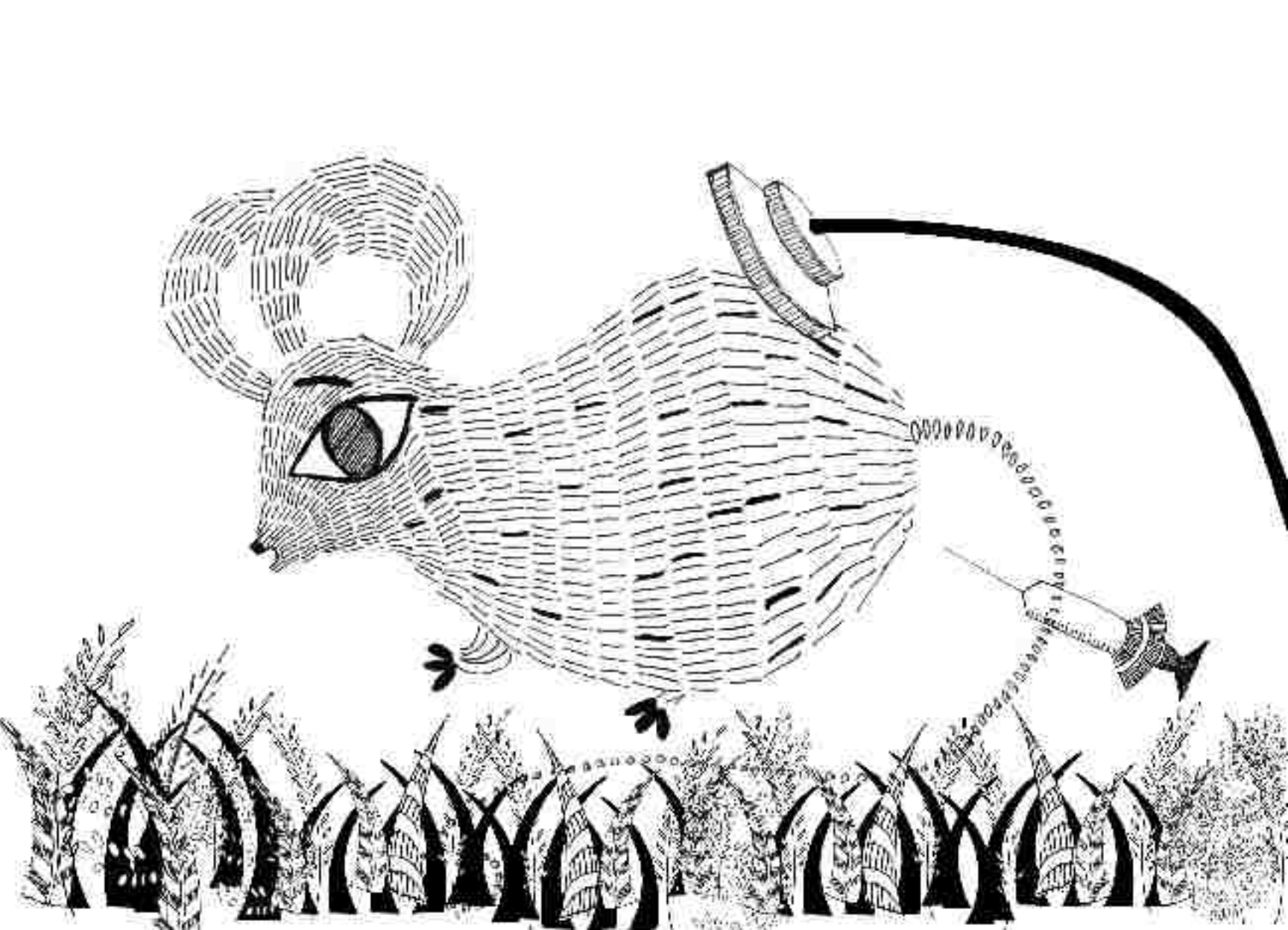

सोमवार

आज सोमवार है
चूहे को बुखार है
चूहा हुआ उदास
पहुँचा डॉक्टर के पास
डॉक्टर ने लगा दी सुई
चूहा बोला-उई!

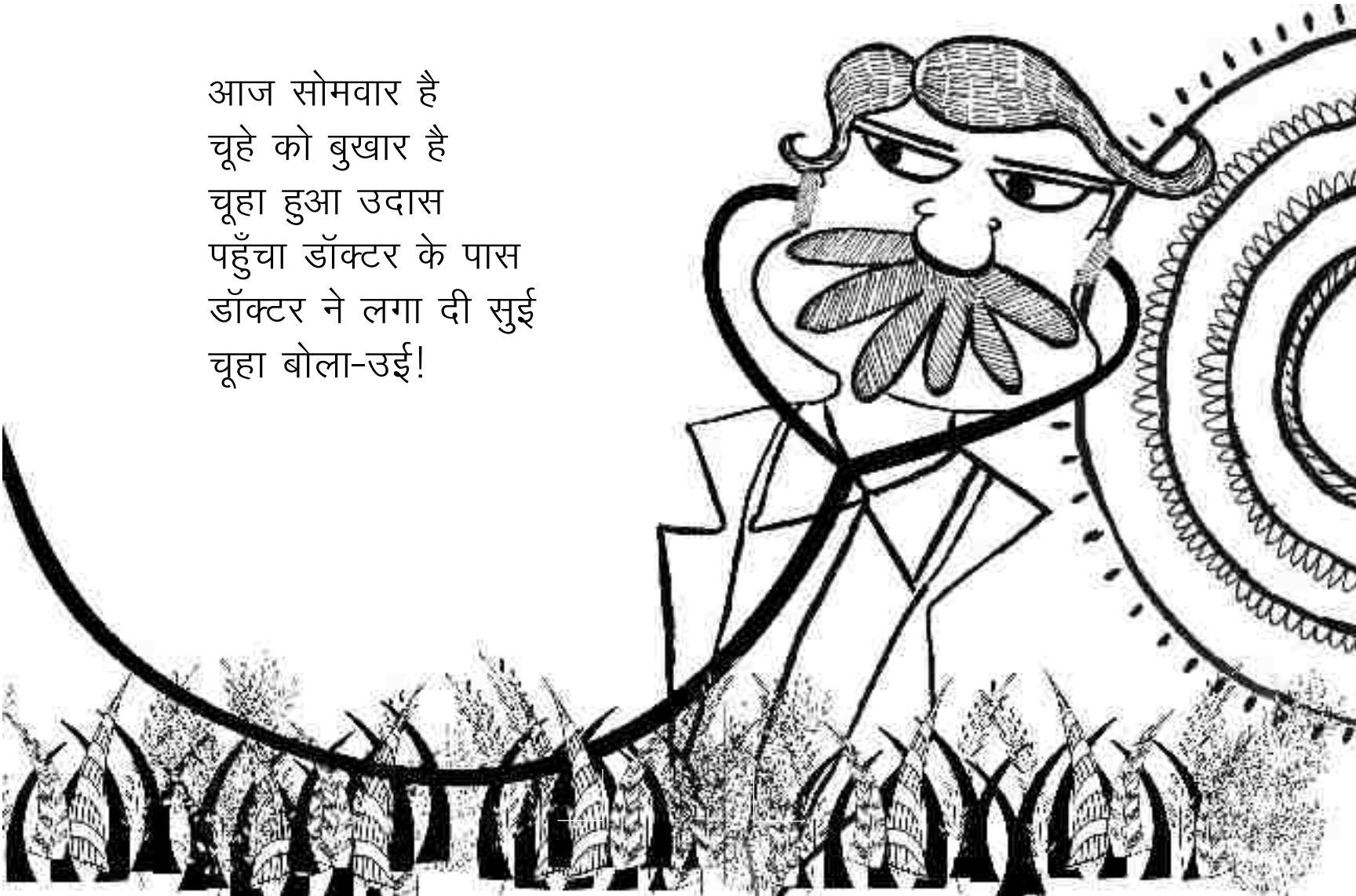

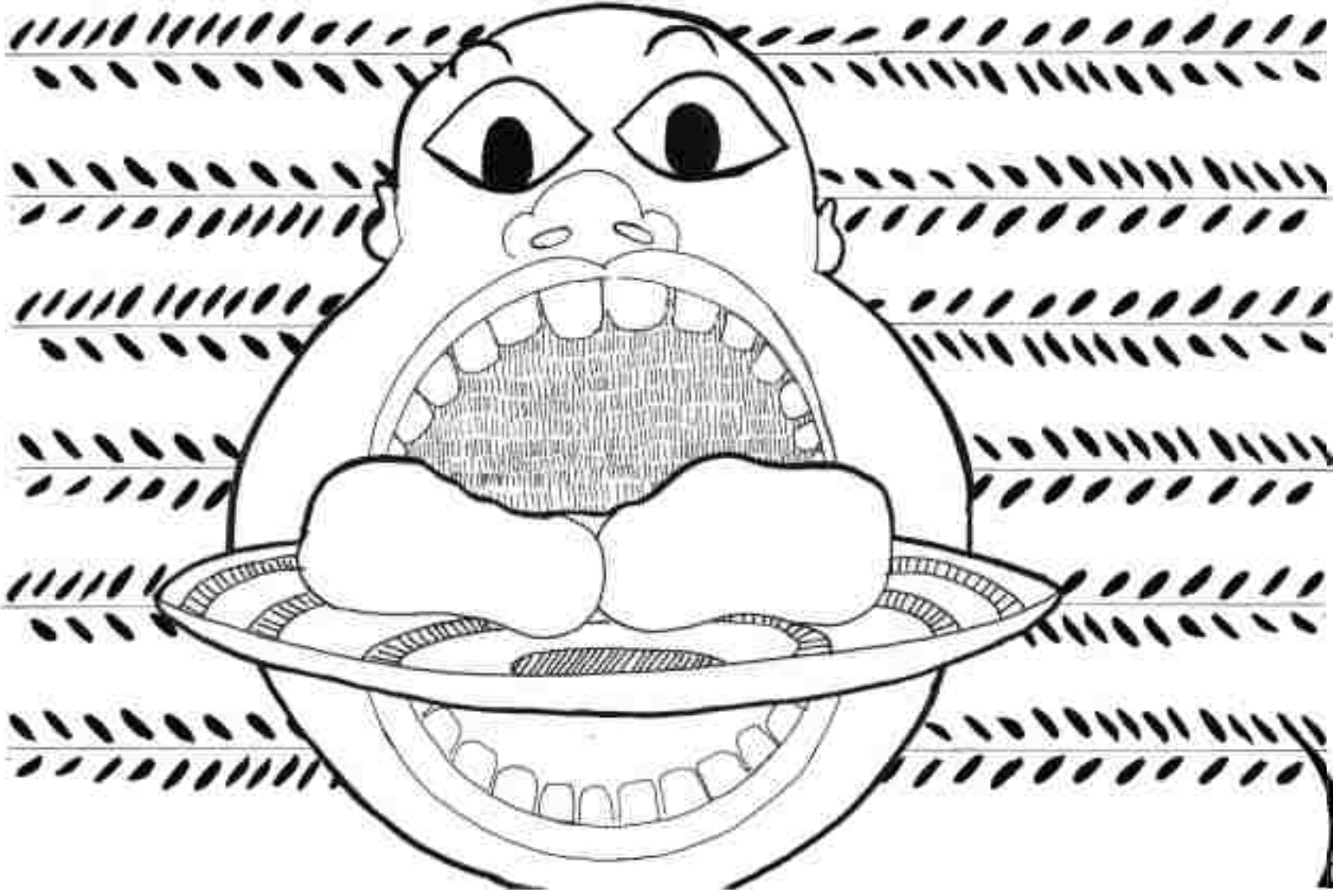

दो आलू

एक प्लेट में दो आलू
मोटू बोला मैं खा लूँ
खाते-खाते थक गया
रोटी लेकर भग गया
रोटी गिर गई रेत में
मोटू रोया खेत में

एक दो दस

एक दो दस
ऊपर से आई बस
बस के नीचे ठेला
रंग-बिरंगा मेला
मेला देखने जाएँगे
भाभी को ले जाएँगे

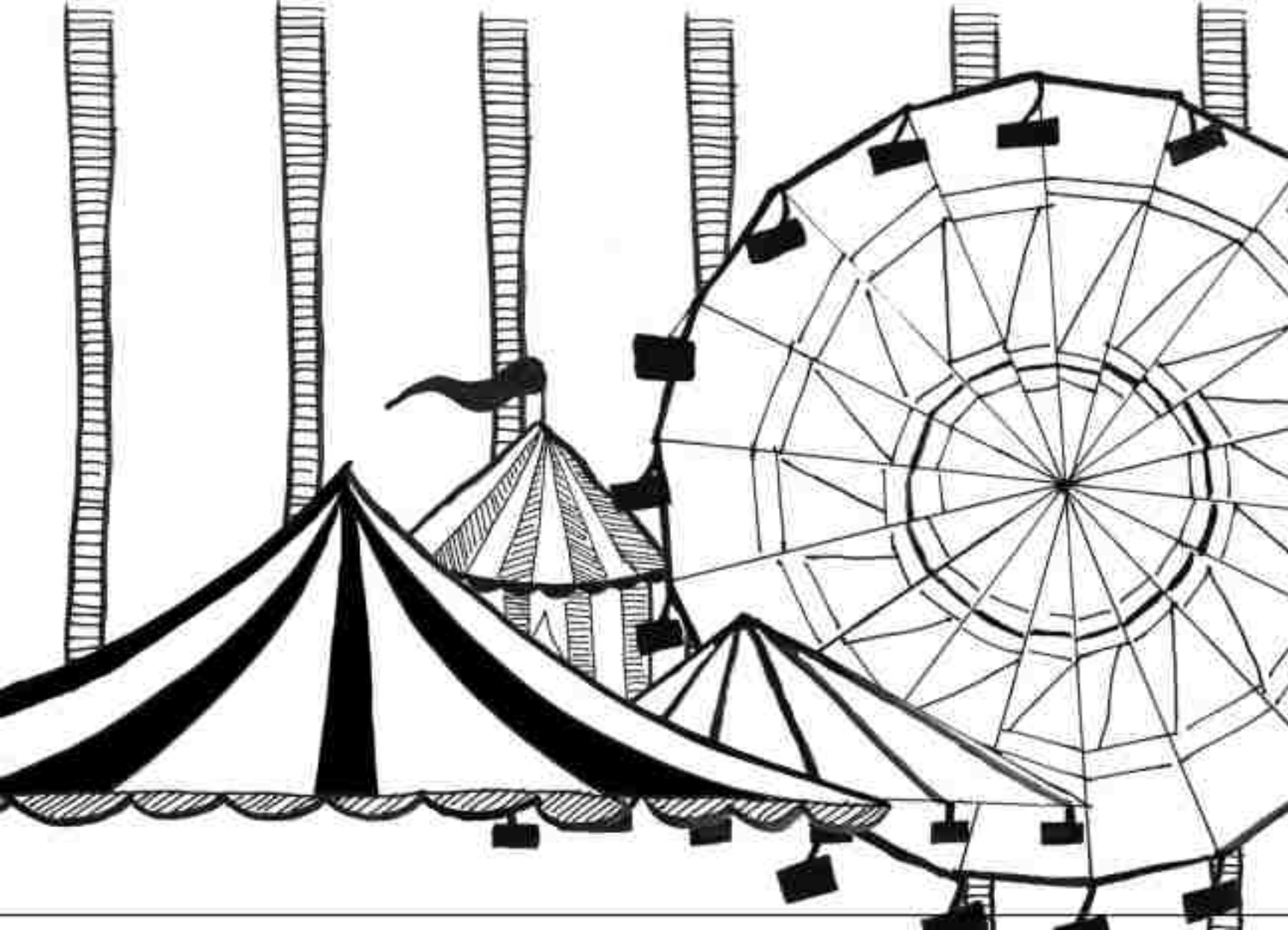

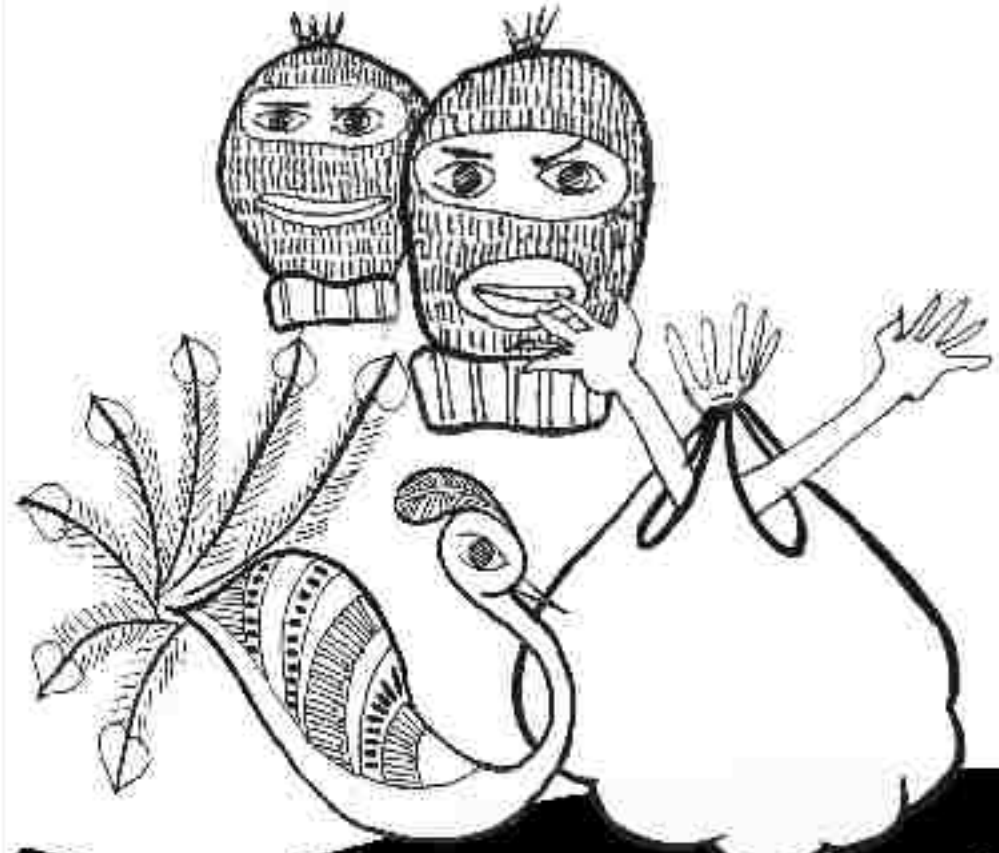

डग डग पसेरी

डग डग पसेरी, पान पसेरी
उड़ गए तीतर, रह गए मोर
बूढ़ी डुकरिया ले गए चोर
चोरों के घर खेती भई

मन मन पीसे मन मन खाएँ
बडे गुरु से जूझन जाएँ
जूझत-जूझत छप्पन छुरी
पाताल पानी डोला
भैंस का सींग पोला

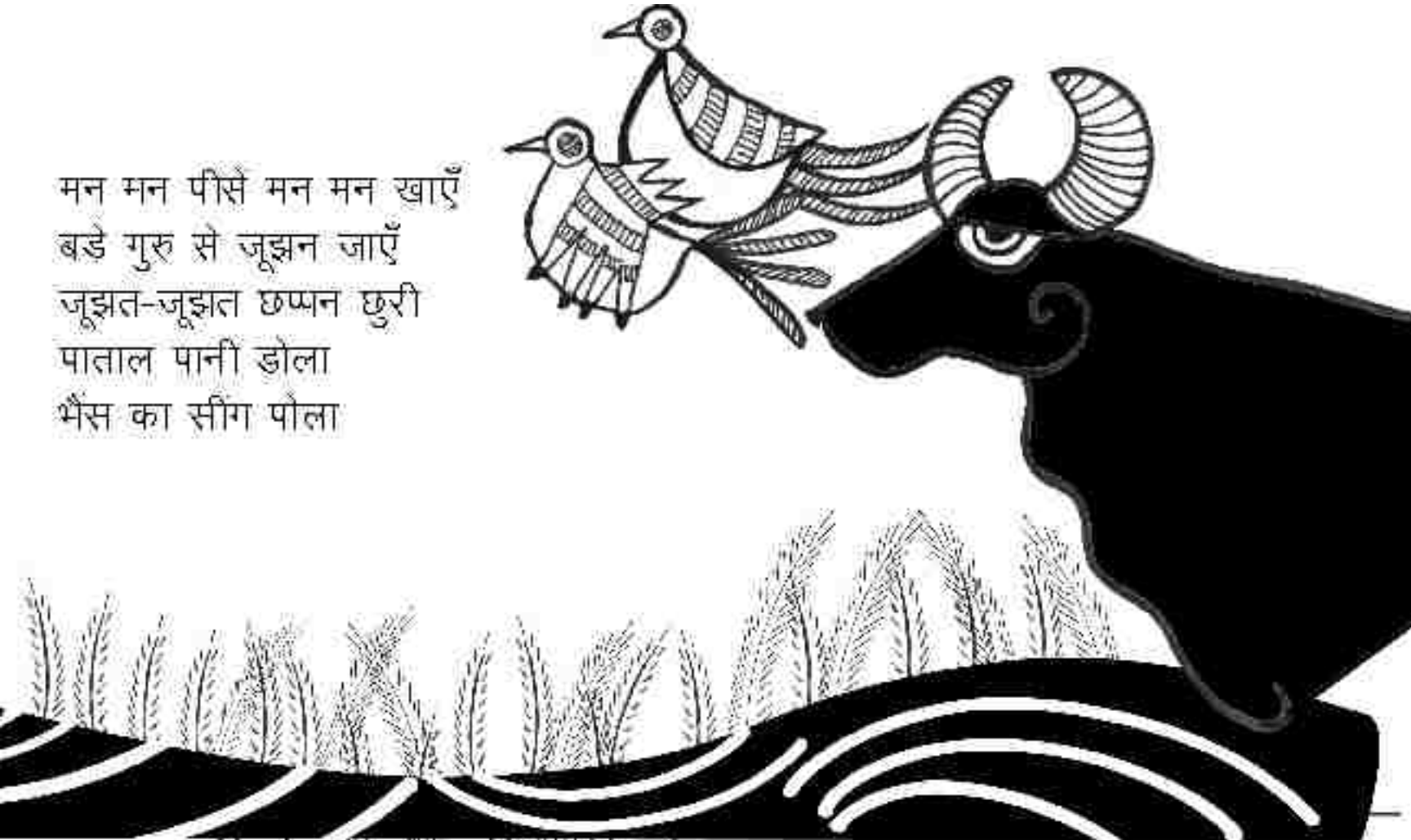

टेसू बेटा

टेसू बेटा बड़े अलाल
खाते बासी रोटी दाल
बासी दाल ने किया धमाल
टेसू की मुण्डी से उड़े बाल
चिकनी मुण्डी चाय गरम
टेसू राजा बेशरम

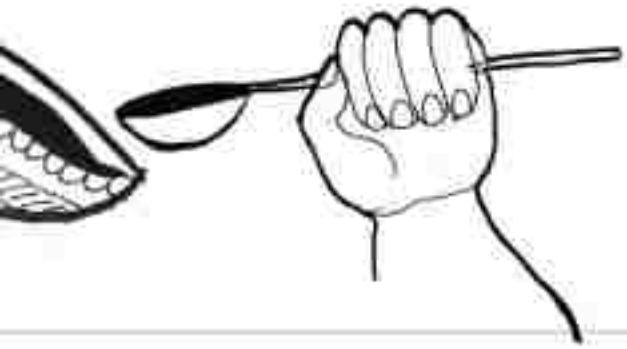

टेसू के फूल

टेसू आए झूम के
टेसू छाए फूल के
टेसू की दो-चार बहुरिया
दो नाचें दो चढ़े अटरिया
नौ मन पीसे दस मन खाए
बड़े गुरु से जूझन जाए
टेसू अकड़ करे, टेसू मकड़ करे
टेसू सौ रुपया लेकर टरे!

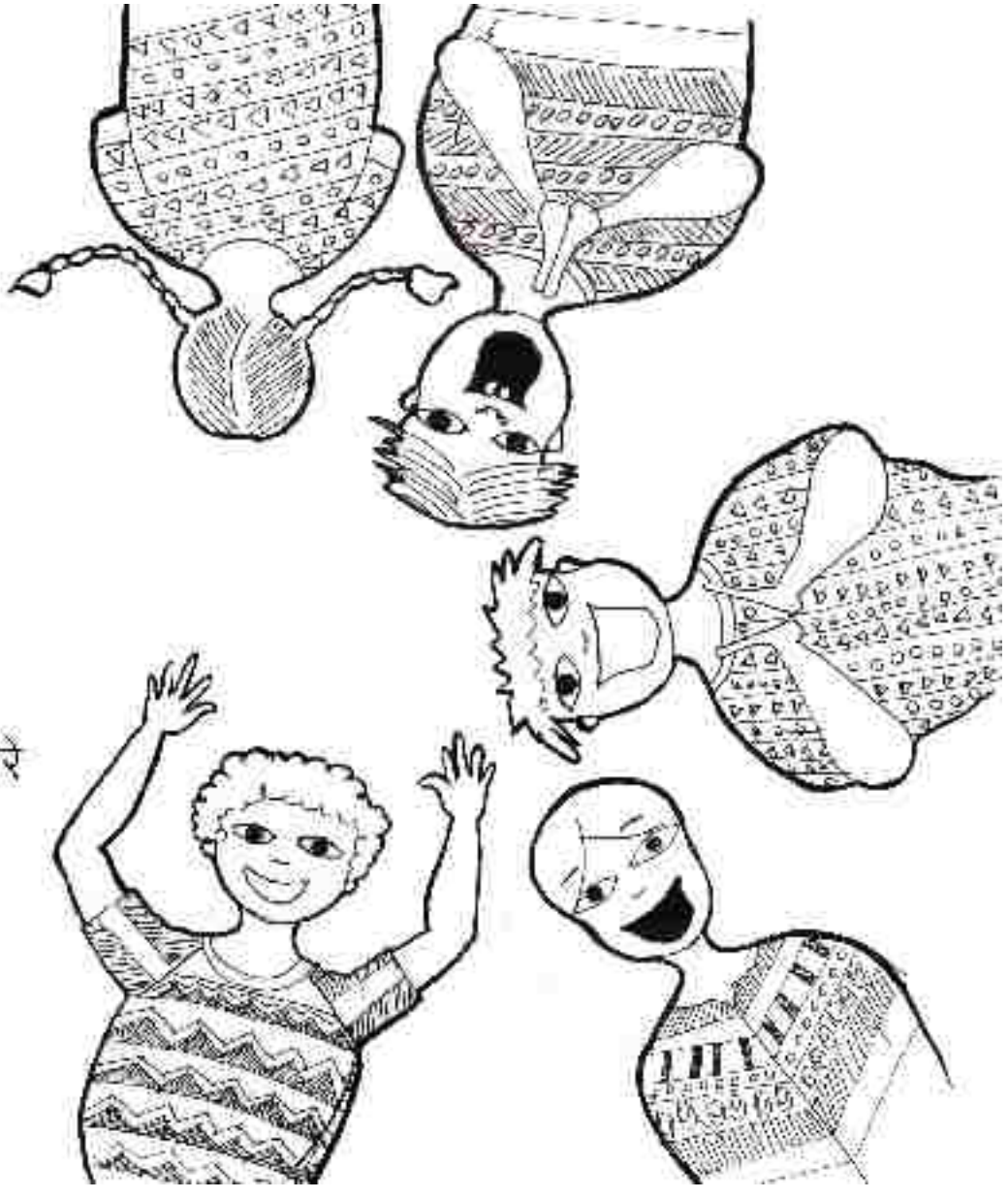

मनीराम

इत्ते से मनीराम
इतनी लम्बी मूँछ
सटक चले मनीराम
मटक चली मूँछ
जित्ते बड़े मनीराम
उनसे बड़ी मूँछ
लटक चले मनीराम
चटक चली मूँछ

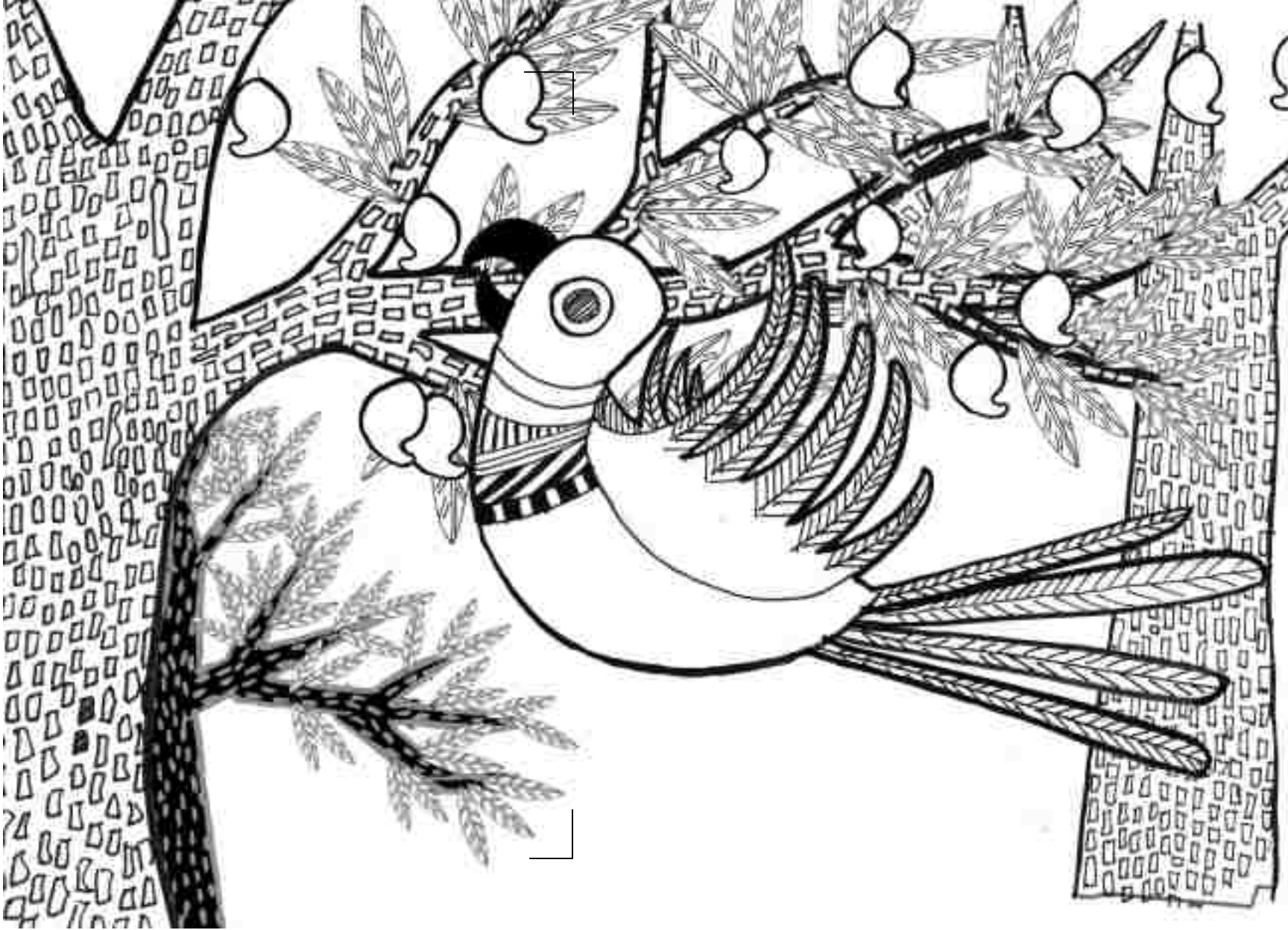

न्यौता

चूहे के घर न्यौता है
देखो क्या-क्या होता है
चिड़िया चावल लाएगी
बिल्ली खीर पकाएगी

बन्दर पान बनाएगा
शेर मामा खाएगा
मुन्ना तू क्यों रोता है
तेरा भी तो न्यौता है